मोचीराम / धूमिल

राँपी से उठी हुई आँखों ने मुझे
क्षण-भर टटोला
और फिर
जैसे पतियाये हुए स्वर में
वह हँसते हुए बोला-
बाबू जी सच कहूँ-मेरी निगाह में
न कोई छोटा है
न कोई बड़ा है
मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने
मरम्मत के लिए खड़ा है।
और असल बात तो यह है
कि वह चाहे जो है
जैसा है, जहाँ कहीं है
आजकल
कोई आदमी जूते की नाप से
बाहर नहीं है
फिर भी मुझे ख़याल है रहता है
कि पेशेवर हाथों और फटे जूतों के बीच
कहीं न कहीं एक आदमी है
जिस पर टाँके पड़ते हैं,
जो जूते से झाँकती हुई अँगुली की चोट छाती पर
हथौड़े की तरह सहता है।
यहाँ तरह-तरह के जूते आते हैं
और आदमी की अलग-अलग 'नवैयत'
बतलाते हैं
सबकी अपनी-अपनी शक्ल है
अपनी-अपनी शैली है
मसलन एक जूता है-
जूता क्या है- चकतियों की थैली है
इसे एक आदमी पहनता है
जिसे चेचक ने चुग लिया है
उस पर उम्मीद को तरह देती हुई हँसी है
जैसे 'टेलीफ़ून' के खंभे पर
कोई पतंग फँसी है
और खड़खड़ा रही है।
'बाबूजी! इस पर पैसा क्यों फूँकते हो?'
मैं कहना चाहता हूँ
मगर मेरी आवाज़ लड़खड़ा रही है
मैं महसूस करता हूँ- भीतर से
एक आवाज़ आती है-'कैसे आदमी हो
अपनी जाति पर थूकते हो।'
आप यकीन करें, उस समय
मैं चकतियों की जगह आँखें टाँकता हूँ
और पेशे में पड़े हुए आदमी को
बड़ी मुश्किल से निबाहता हूँ।
एक जूता और है जिससे पैर को
'नाँघकर' एक आदमी निकलता है
सैर को
न वह अक्लमंद है
न वक्त का पाबंद है
उसकी आँखों में लालच है
हाथों में घड़ी है
उसे जाना कहीं नहीं है
मगर चेहरे पर
बड़ी हड़बड़ी है
वह कोई बनिया है
या बिसाती है
मगर रोब ऐसा कि हिटलर का नाती है
'इशे बाँद्धो, उशे काट्टो, हियाँ ठोक्को,वहाँ पीट्टो
घिस्सा दो, अइशा चमकाओ, जूत्ते को ऐना बनाओ
ओफ्फ़! बड़ी गर्मी है'
रुमाल से हवा करता है,
मौसम के नाम पर बिसूरता है
सड़क पर 'आतियों-जातियों' को
बानर की तरह घूरता है
गरज़ यह कि घण्टे भर खटवाता है
मगर नामा देते वक्त
साफ 'नट' जाता है
शरीफ़ों को लूटते हो' वह गुर्राता है
और कुछ सिक्के फेंककर
आगे बढ़ जाता है
अचानक चिहुँककर सड़क से उछलता है
और पटरी पर चढ़ जाता है
चोट जब पेशे पर पड़ती है
तो कहीं-न-कहीं एक चोर कील
दबी रह जाती है
जो मौका पाकर उभरती है
और अँगुली में गड़ती है।
मगर इसका मतलब यह नहीं है
कि मुझे कोई ग़लतफ़हमी है
मुझे हर वक्त यह खयाल रहता है कि जूते
और पेशे के बीच
कहीं-न-कहीं एक अदद आदमी है
जिस पर टाँके पड़ते हैं
जो जूते से झाँकती हुई अँगुली की चोट
छाती पर
हथौड़े की तरह सहता है
और बाबूजी! असल बात तो यह है कि ज़िंदा रहने के पीछे
अगर सही तर्क नहीं है
तो रामनामी बेंचकर या रंडियों की
दलाली करके रोजी कमाने में
कोई फ़र्क नहीं है
और यही वह जगह है जहाँ हर आदमी
अपने पेशे से छूटकर
भीड़ का टमकता हुआ हिस्सा बन जाता है
सभी लोगों की तरह
भाषा उसे काटती है
मौसम सताता है
अब आप इस बसंत को ही लो,
यह दिन को ताँत की तरह तानता है
पेड़ों पर लाल-लाल पत्तों के हज़ारों सुखतल्ले
धूप में, सीझने के लिए लटकाता है
सच कहता हूँ- उस समय
राँपी की मूठ को हाथ में सँभालना
मुश्किल हो जाता है
आँख कहीं जाती है
हाथ कहीं जाता है
मन किसी झुँझलाए हुए बच्चे-सा
काम पर आने से बार-बार इंकार करता है
लगता है कि चमड़े की शराफत के पीछे
कोई जंगल है जो आदमी पर
पेड़ से वार करता है
और यह चौकने की नहीं, सोचने की बात है
मगर जो ज़िंदगी को किताब से नापता है
जो असलियत और अनुभव के बीच
खून के किसी कमज़ात मौके पर कायर है
वह बड़ी आसानी से कह सकता है
कि यार! तू मोची नहीं, शायर है
असल में वह एक दिलचस्प ग़लतफ़हमी का शिकार है
जो वह सोचता कि पेशा एक जाति है
और भाषा पर
आदमी का नहीं, किसी जाति का अधिकार है
जबकि असलियत है यह है कि आग
सबको जलाती है सच्चाई
सबसे होकर गुज़रती है
कुछ हैं जिन्हें शब्द मिल चुके हैं
कुछ हैं जो अक्षरों के आगे अंधे हैं
वे हर अन्याय को चुपचाप सहते हैं
और पेट की आग से डरते हैं
जबकि मैं जानता हूँ कि 'इन्कार से भरी हुई एक चीख़'
और 'एक समझदार चुप'
दोनों का मतलब एक है-
भविष्य गढ़ने में, 'चुप' और 'चीख'
अपनी-अपनी जगह एक ही किस्म से
अपना-अपना फ़र्ज अदा करते हैं

सरसंघचालक के भाषण का 'लिखित' रूप जो पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की इस जिद के कारण बेचारे नहीं दे सके कि अंतिम वक्ता वह खुद होंगे,सरसंघ चालक नहीं

विष्णु नागर

भूतपूर्व महामहिम जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की राजधानी नागपुर में, उसके राष्ट्रपति भवन में आप पधारे, इसलिए आपका स्वागत- अभिनंदन। आपको याद होगा कि 2010 में आप कांग्रेस की सरकार में वित्त मंत्री थे तो आपने हमारे संगठन को आतंकवादी संगठन कहा था,आज उसीके मुख्यालय को आपने अपनी चरणधूलि से पवित्र किया है,इससे अधिक प्रसन्नता और सौभाग्य की बात हमारे लिए और क्या हो सकती है? इससे 2019 में कुछ मदद मिली तो हम आपका आभार मन ही मन मानेंगे।

आपने उसी संगठन के पितामह डा. हेडगेवारजी को 'भारतमाता का सपूत' बताकर हमें गदगद ही कर दिया। आपसे इतनी अधिक उदारता की आशा तो हममें से किसी को नहीं थी। हृदय तो हमारा होता नहीं,फिर भी चूँकि हृदय से धन्यवाद देने की रस्म चली आ रही है,उसे निभाते हुए मैं आपको बार- बार हृदय नामक अपने काल्पनिक अंग से धन्यवाद देता हूँ। और आशा ही नहीं विश्वास प्रकट करता हूँ कि मोदीजी इसके लिए आपको अवश्य उचित ढँग से उपकृत करेंगे।

मैं इसलिए भी आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने अपनी मातृसंस्था कांग्रेस तो कांग्रेस, अपनी बेटी के विरोध की भी परवाह नहीं की और यहाँ आए ,यह आपके बहुत बड़ा संत और परमत्यागी होने का अकाटय प्रमाण है। ऐसे महापुरुष इस धराधाम पर प्रकट होते रहें,यह हमारी मनोकामना है और हमारा सारा भाषण धन्यवाद ज्ञापन में ही खर्च न हो जाए, इसलिए इस सिलसिले में अंतिम बात यह कहना चाहूँगा कि आपने जो कहा,अंग्रेजी में कहा, यह तो बहुत ही अच्छा किया क्योंकि हमारे स्वयंसेवक तो लट्ठ चलाते हैं,दंगे करते- करवाते हैं, उन्हें इसके लिए आंग्ल भाषा ज्ञान की क्या जरूरत,इसलिए आपने कहा तो बहुत कुछ मगर उनके भेजे में कुछ घुसा नहीं होगा,यह हमारे लिए अतीव प्रसन्नता का विषय है।वैसे तो भूतपूर्व महामहिम जी हम तीन साल तक जो प्रशिक्षण देते हैं,उसके जरिए दिमाग में इतना गोबर भर देते हैं कि वहाँ किसी चीज के लिए कोई जगह नहीं बचती,इसलिए आपने अगर हिंदी में भी भाषण दिया होता तो वह भी उतना ही बेअसर होता, जितना कि आपका अंग्रेजी में दिया गया यह भाषण है।

रही बात उन बड़ी- बड़ी बातों की,जो आपने कीं,अच्छा किया।हम आप जैसों को सादर बुलाते ही इसलिए हैं कि आप इधर लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता, विविधता जैसी बातें मजे से करके खुश होते रहें कि आपने हमारे गढ़ में आकर अपनी बात कही। उधर हम भी दुनिया को दिखा सकें कि अच्छी तरह आँख- कान खोलकर देख-सुन लो लोगो कि हम इनको बुलाते हैं,सुनने का नाटक करते हैं पर इनका रत्तीभर भी असर ग्रहण नहीं करते। हमने तो 1947 में गाँधीजी को भी बुलाया था। वे भी बोल गए वह सब, जो वह सोचते थे।हमने उनसे इतना अधिक असर लिया कि वह 1948 में दुनिया से चले ही गए। और नाथूराम गोडसे को इसके लिए शुक्रिया कहने का समय भी अब आ चुका है,यह लोकतंत्र में हमारी बढ़ती आस्था का प्रमाण है।

खैर आप फैसला करो कि ज्यादा जाननेवाला ज्यादा बुद्धिमान होता है या हम लट्ठबाज! हम जानते थे कि भूतपूर्व महामहिम जी कि आप यहाँ आए हैं तो यहाँ भी वही कहेंगे, जो आप कहते आए हैं और आपको कोई भ्रम रहा भी होगा तो अब टूट जाएगा कि हम अब भी वही करेंगे, जो करते आए हैं। आप भी,आप रहेंगे तो हम भी हम रहेंगे। आपके संघ भवन से बाहर निकलते ही हमारा काम शुरू हो जाएगा।

आप यहाँ बिना काली टोपी पहने बैठे हैं न, खुश होंगे कि इतनी काली टोपियों के बीच आप अकेले बिना टोपीवाले हैं मगर थोड़ी देर बाद सोशल मीडिया पर हमारे स्वयंसेवक का कमाल देखिएगा। वे फोटोशाप से आपके सिर पर काली टोपी पहना देंगे।आपने हमारे केसरिया को हमारी तरह ध्वज प्रणाम नहीं किया मगर हमारी टीम यह भी दिखा देगी कि आपने भी यही किया है। जो- जो आपने नहीं कहा,वह भी हम सोशल मीडिया पर आपके नाम से डलवा देंगे। यह हमारी कल्चर है, यह हमारी संस्कृति है, यह हमारा हिंदुत्व है और एक आप हैं कि हमारे लिए सबकुछ छोड़कर चले आए। आपको पब्लिसिटी का क्षणिक लाभ मिला,हमें जो लाभ मिला,वह परमानेंट है। फिर से आपके आने का धन्यवाद।अगली बार भी आप जैसा कोई मिल जाए तो फिर हमारी बल्ले -बल्ले है। हाँ जय हिंद के साथ आपने वंदे मातरम कहकर जो वंदनीय कार्य किया है,उसके लिए अतिरिक्त अभिनंदन।

किताबी ज्ञान बनाम सत्य ज्ञान / कोलंबा कालीधर

एक संन्यासी ईश्वर की खोज में निकला हुआ था और एकआश्रम में जाकर ठहरा। पंद्रह दिन तक उस आश्रम में रहा, फिर ऊब गया। उस आश्रम का जो बूढ़ा गुरु था वह कुछ थोड़ी सी बातें जानता था, रोज उन्हीं को दोहरा देता था। फिर उस युवा संन्यासी ने सोचा, यह गुरु मेरे योग्य नहीं, मैं कहीं और जाऊं। यहां तो थोड़ी सी बातें हैं, उन्हीं का दोहराना है।कल सुबह छोड़ दूंगा इस आश्रम को, यह जगह मेरे लायक नहीं।लेकिन उसी रात एक घटना घट गई कि फिर उस युवासंन्यासी ने जीवन भर वह आश्रम नहीं छोड़ा। क्या हो गया?

रात एक और संन्यासी मेहमान हुआ। रात आश्रम के सारे मित्र इकट्ठे हुए, सारे संन्यासी इकट्ठे हुए, उस नये संन्यासी से बातचीत सुनने। उस नये संन्यासी ने बड़ी ज्ञान की बातें कहीं, उपनिषद की बातें कहीं, वेदों की बातें कहीं। वह इतना जानता था, इतना सूक्ष्म उसका विश्लेषण था, ऐसा गहरा उसका ज्ञान था कि दो घंटे तक वह बोलता रहा। सबने मंत्रमुग्ध होकर सुना। फिर उस युवा संन्यासी के मन में हुआ- गुरु हो तो ऐसा हो। इससे कुछ सीखने को मिल सकता है। एक वह गुरु है, वह चुपचाप बैठा है, उसे कुछ भी पता नहीं। अभी सुन कर उस बूढ़े के मन में बड़ा दुख होता होगा, पश्चात्ताप होता होगा, ग्लानि होती होगी—कि मैंने कुछ न जाना और यह अजनबी संन्यासी बहुत कुछ जानता है।युवा संन्यासी ने यह सोचा कि आज वह बूढ़ा गुरु अपने दिल में बहुत—बहुत दुखी, हीन अनुभव करता होगा।

तभी उस आए हुए संन्यासी ने बात बंद की और बूढ़े गुरु से पूछा कि आपको मेरी बातें कैसी लगीं? बूढ़ा गुरु खिलखिला कर हंसने लगा और कहने लगा, तुम्हारी बातें? मैं दो घंटे से सुनने की कोशिश कर रहा हूं तुम तो कुछ बोलते ही नहीं हो। तुम तो बिलकुल बोलते ही नहीं हो।वह संन्यासी बोला, दो घंटे से मैं बोल रहा हूं आप पागल तो नहीं हैं! और मुझसे कहते हैं कि मैं बोलता नहीं हूं।उस ने कहा, हां, तुम्हारे भीतर से गीता बोलती है, उपनिषद बोलता है, वेद बोलता है, लेकिन तुम तो जरा भी नहीं बोलते हो। तुमने इतनी देर में एक शब्द भी नहीं बोला! एक शब्द तुम नहीं बोले, सब सीखा हुआ बोले, सब याद किया हुआ बोले, जाना हुआ एक शब्द तुमने नहीं बोला। इसलिए मैं कहता हूं कि तुम कुछ भी नहीं बोलते हो, तुम्हारे भीतर से किताबें बोलती हैं।

एक ज्ञान है जो उधार है, जो हम सीख लेते हैं। ऐसे ज्ञान से जीवन के सत्य को कभी नहीं जाना जा सकता। जीवन के सत्य को केवल वे जानते हैं जो उधार ज्ञान से मुक्त होते हैं।और हम सब उधार ज्ञान से भरे हुए हैं। हमें ईश्वर के संबंध में पता है। और ईश्वर के संबंध में हमें क्या पता होगा जब अपने संबंध में ही पता नहीं है? हमें मोक्ष के संबंध में पता है। हमें जीवन के सभी सत्यों के संबंध में पता है। और इस छोटे से सत्य के संबंध में पता नहीं है जो हम हैं! अपने ही संबंध में जिन्हें पता नहीं है, उनके ज्ञान का क्या मूल्य हो सकता है?

दुनिया में दो तरह के लोग हैं, एक अज्ञानी और एक ऐसे अज्ञानी जिन्हें ज्ञानी होने का भ्रम है। तीसरी तरह का आदमी मुश्किल से कभी—कभी जन्मता है। लेकिन जब तक कोई तीसरी तरह का आदमी न बन जाए, तब तक उसकी जिंदगी में न सुख हो सकता है, न शांति हो सकती है।क्योंकि जहां सत्य नहीं है, वहां सुख असंभव है। सुख सत्य की छाया है। जिस जीवन में सत्य नहीं है, वहां संगीत असंभव है,क्योंकि सभी संगीत सत्य की वीणा से पैदा होता है। जिस जीवन में सत्य नहीं है, उस जीवन में सौंदर्य असंभव है; क्योंकि सौंदर्य वस्त्रों का नाम नहीं है और न शरीर का नाम है।सौंदर्य सत्य की उपलब्धि से पैदा हुई गरिमा है। और जिस जीवन में सत्य नहीं है, वह जीवन अशक्ति का जीवन होगा,क्योंकि सत्य के अतिरिक्त और कोई शक्ति दुनिया में नहीं है।